

नृपान् Bālg. P. 1, 3, 20. अवनिधुयाजन्त्यंश 8, 43. बालद्विजमुहन्मित्रपितृ-
धातुगुरु 49. भूत 17, 11. पितृविप्रब्रह्म 5, 26, 14. स्वपरदुक्ताधर्मेण 6,
16, 42. Vgl. अ०, अन्त्या०, अन्तक०, अस्म०, क्रतु०, गर्भ०, पुरु०, मित्र०.
Ausserhalb des comp. mit einem gen.: (मम) पृथिवीमुहदा हुक्: MBh. 7,
6512. In der älteren Sprache häufig als subst. *Beleidiger, Beschädiger; Un-
hold, Unholdin*: हुक्ते दहामि सं मकीरनिन्त्रा: RV. 1, 133, 1. 3, 31, 19. कृ-
तं हुक्ते रत्नसौ भङ्गुरावत: 7, 104, 7. 9, 71, 1. अप हुक्स्तमं आवर्जुष्टम् 7,
78, 1. हुक्: सचत्ते अनृता जनानाम् 61, 5, 2, 23, 17. Kāth. 24, 9. von den
Schlingen des Unholdes: हुक्: पाशान्प्रति स मुचीष्ट RV. 7, 59, 8. AV. 2,
10, 1. 16, 6, 10. Kāth. 17, 19. — 2) f. *Beleidigung, Kränkung, Beschä-
digung*: को अस्या नो हुक्ते ऽवध्वत्या उन्नैष्यति तत्रिप: AV. 7, 103, 1.
(पाकि) हुक्: निद: अवाधात् RV. 4, 4, 15. 7, 16, 8. हुक्ते न: पाशंरुस: 10,
28, 8. 2, 33, 6. यो न: कदा चिदभिदासति हुक्ता 7, 104, 7. हुक्स्पदे 2, 23, 16.
5, 74, 4. तत० adj. Bālg. P. 1, 18, 37.

हुक् 1) m. Sohn, f. ३ Tochter Çabbārthak. im ÇKDr. — 2) m. ein
See; s. u. द्रक्.

हुक्ता m. gaṇa श्रीकृष्णादि zu P. 4, 2, 80. = हुघण, हुक्णि Bein.
Brahman's Bhar. im Dvirūpak. ÇKDr.

हुक्तरै (हुक्म्, acc. von 2. हुक्, + तर) adj. den *Beleidiger* oder *Un-
hold überwindend*: स हि पुत्र चिदाजसा विरुक्मता दीर्घानो भवति हुक्ते-
तर: परशुर्न हुक्तर: RV. 1, 127, 3.

हुक्ते (von 1. हुक्) f. = 2. हुक् 1: प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप हुक्ता
तन्वै गूहमाना RV. 7, 104, 17. Nach Sā. instr. von 2. हुक्.

हुक्ते m. = हुघण, हुक्णि Bein. Brahman's Uḡgval. zu UNĀDIS. 2, 49.
AK. 1, 1, 4, 12. H. 211. (सुरान्) हुक्तेपोनेन्द्रहृदादीन् Rāga-Tar. 1, 26. Bein.
Çiva's Çiv. हुक्तेन unter den Beinn. Viṣṇu's Hariv. 14120.

हुक्ते (von 1. हुक्) m. f. = 2. हुक् 1. AV. 8, 4, 7, 17 (in Abweichung
von RV.).

हुक्ते m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. pl. seine
Nachkommen gaṇa यस्कादि zu 2, 4, 63. In der Handschrift des Hariv.,
welche Langlois benutzt hat, wechselt हुक्ते mit हुक्ते.

हुक्ते m. pl. N. pr. eines Volksstammes: यदिन्द्रायी यडेषु तुर्वशेषु य-
द्वृक्षेषु पुरुष स्य: RV. 4, 108, 8. 7, 18, 6. 12. 14. 8, 10, 5. Naigh. 2, 3.
Im Epos ist Druhju neben Jadu u. s. w. ein Sohn Jajāti's MBh. 1,
348 f. fgg. 3704. Hariv. 1604. 1618. 1631. VP. 413. fgg. 443. Bālg. P.
9, 18, 33. 23, 14. Fälschlich डक्ते MBh. 1, 3160. 3162. 3433.

हुक्ते (von 1. हुक्) adj. *beleidigend, beschädigend*: न यं दिप्सति दि-
प्सवो न हुक्तेणो जनानाम् RV. 1, 25, 14. 6, 22, 8. 10, 99, 7. AV. 4, 29, 1.
— Vgl. अ०.

1. हु, हुणाति Naigh. 2, 19. etwa *ausholen* (zum Schlag, Wurf) oder
treffen: तूष्णीमनु प्रसिति हुणानो ऽस्तासि विध्य रत्नस्तपिष्ठै: RV. 4,
4, 1. हु, हुणाति = वध und गति Duātup. 27, 33, v. l.

2. हु UNĀDIS. 2, 57. Vop. 26, 71. 1) Gold Uḡgval. H. an. 1, 12. — 2)
nach Belieben eine Gestalt annehmend (कामरूपिन्) H. an.

हुघण m. = हुघन Bhar. im Dvirūpak. und Sāṃkṣiptas. ÇKDr.

हुङ्, हुङ्कति = गतिकर्मन् Naigh. 2, 14.

हुण = हुण 1) m. Scorpion Çabbārthak. im ÇKDr. — 2) n. Bogen
H. 773, v. l.

हुक्, हुक्ते शब्देत्साहयो: oder शब्देत्साहे (उत्साह = वृद्धि, श्रद्धेत्य
oder श्रद्धेत्य) Duātup. 4, 4. — Vgl. धेक्.

— प्र anfangen zu wiehern u. s. w.: प्रादिकत क्यदिपम् Bhatt. 17, 8.

हुक्ता m. = हुक्ताणा Wils. ÇKDr.

हुक्ताणा m. s. u. दृकाणा.

हुक्ते adj. = दृश्य sichtbar: अ० Mund. Up. 4, 1, 6. Wohl aus द्विष् =
दृष् = दर्श zu erklären.

हुक्ताणा m. s. u. दृकाणा.

हुक्ते (von 1. हुक्) nom. ag. der *Andern Etwas zu Leide thut, zu
schaden sucht, übelwollend* MBh. 5, 2124. Rāga-Tar. 6, 159. अ० R. 1, 7,
13 (Gorr. 8).

हुक्तेव्य partic. fut. pass. von 1. हुक्: न सतानुत्तिषे हुक्तेव्यम् Çat.
Br. 3, 4, 2, 9. व्यं न च मित्रेषु MBh. 3, 11471.

हुक्ते (von हुक् = हुक्) m. *Beleidigung, Kränkung, Beschädigung*; s.
अत्राय, wo als Grundbedeutung aufzustellen ist arglos, nicht übelwollend.

हुक्तेमित्र (हुक्ते + मि०) m. ein *arglistiger Freund*: अस्मैव विध्य दिव
आ सज्ञानस्तपिष्ठेन केषसा हुक्तेमित्रान् RV. 10, 89, 12.

हुक्तेवचस् (हुक्ते + व०) adj. *kränkende Rede führend*, mit Tmesis: हुक्ते-
वच चिद्वचसं आनवाय RV. 6, 62, 9; vgl. ऋगुशंस.

हुक्तेवच (हुक्ते + वाच्) adj. dass.: हुक्तेवचस्ते निरुध्य संचत्ताम् RV. 7,
104, 14. — Vgl. अ०.

द्रोण UNĀDIS. 3, 10. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Trik. 3, 5, 15.

1) parox. n. ein hölzerner (4. हु) Trog, Kufe Nir. 3, 26. हरि: पर्यद्रवज्ञा:
सूर्यस्य द्रोणं ननते अयो न वासी RV. 9, 93, 1. क्रत्वा हि द्रोणैः अयसे ऽग्ने
वासी न कृत्य: 6, 2, 8. प्रो द्रोणे हर्य: कर्मागमन् 37, 2. आ ते वृष्वर्षणे
द्रोणमस्युर्धतप्रयो नेर्मयो मदत: 44, 20. von den Soma-Gefässen ge-
wöhnlich pl. 9, 3, 1. 15, 7. अग्नि द्रोणानि धावति 28, 4. 30, 4. 67, 14. अत्र
द्रोणानि घृतवन्ति सोद 96, 13. — (रित०) तदधिद्रोणा आद्ये MBh. 1, 5105.

6331. — 2) m. n. ein best. Hohlmaass AK. 2, 9, 89. Trik. 3, 3, 130. H.
an. 2, 145. Sidh. K. 249, b, 11. = 4 Āḍhaka H. 886. = 4 Āḍhaka =
16 Pushkala = 128 Kuṇḍī = 1024 Mushṭi Kull. zu M. 7, 126. =
200 Pala = 1/20 Kumbha ders. zu M. 8, 320. = 1/16 Khāri = 4
Āḍhaka Colebr. Alg. 3. = 2 Āḍhaka = 1/2 Sūrpa = 64 Çera Wils
126. = 32 Çera ÇKDr. = Āḍhaka Med. n. 17. Viçva bei Uḡgval.
त्रोकि० MBh. 3, 15405. 15409. धान्य० M. 7, 126. तिल० 11, 134. Jāgñ. 3,

274. ०मात्राणि — मधूनि R. 2, 56, 8. 5, 60, 8. नार०, उदक० Suçr. 1, 32.
18. 2, 43, 9. 50, 15. सद्रोणा खारी P. 6, 3, 79. Schol. Varāh. Brh. S. 21, 32.
36. 23, 6. fgg. 54, 17. 56, 2. — 3) m. n. ein best. Flächenmaass beim Feld-
bau, so viel Land als zur Aussaat eines Droṇa Getreides erforderlich
ist Med. Colebr. Misc. Ess. II, 245 in einer Inschr. — 4) m. ein See oder

Teich von bestimmter Länge (400 Dhanus) Ġalāçajattva im ÇKDr.
— 5) eine best. Art von Wolken, aus denen der Regen wie aus einem
Trobe hervorströmt: द्रोणः शस्यप्रपूर्कः Ġjotist. im ÇKDr. को ऽयमेव-
विधे काले कालपाशस्थिते मयि । अनावृष्टिक्ते शस्ये द्रोणमेघ इवात्थितः ॥

MRĀKH. 163, 7. 8. केयमभ्युद्यते शस्त्रे मृत्युवक्तगते मयि । अनावृष्टिक्ते श-
स्ये द्रोणवृष्टिर्वागता ॥ 171, 21. 22. — 6) Rabe AK. 3, 4, 23, 51. Trik.
3, 3, 130. H. 1323. Sch. H. an. Med. Hār. 84. Vgl. द्रोणाकक und unten
u. 9, b. — 7) m. Scorpion Trik. 3, 3, 129. Rāgan. im ÇKDr. Vgl. हुण. —